साम्यवादी खेमे की आत्म-आलोचना

शिवदास घोष

साम्यवादी खेमे की आत्म-आलोचना

कम्युनिस्ट लीग ऑफ युगोस्लाविया के नेता मार्शल टीटो को कॉमिनफोर्म से निष्कासित किये जाने के बाद लिखे गये इस लेख ने तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन में चिंतन एवं संगठन के क्षेत्र में मौजूद यांत्रिक प्रक्रिया की ओर ध्यान आकृष्ट किया था। कॉमरेड घोष ने बहुत पहले *1948* में ही चेतावनी दी थी कि अगर गैर-मार्क्सवादी यांत्रिक दृष्टिकोण की इस समस्या को समय रहते न सुलझाया गया, तो दुनिया के लोग समाजवादी देशों को एक-दूसरे के साथ खुले टकराव या युद्ध में लिप्त होने की एक नयी परिघटना के गवाह बनेंगे-बाद के वर्षों में यह कथन भविष्यवाणी की तरह सच साबित हुआ।

विश्व साम्राज्यवाद और हर एक देश में सभी प्रकार की प्रतिक्रियावादी ताकतों के खिलाफ स्थाई शांति, लोकतंत्र एवं समाजवाद के लिए सोवियत संघ तथा यूरोप के जन गणतांत्रिक देशों के नेतृत्व में दुनियाभर में चल रहे अभूतपूर्व जन-संघर्षों और प्रगतिशील जनवादी आन्दोलनों ने द्वितीय विश्व-युद्धोत्तर काल में पूंजीवादी-साम्राज्यवादी खेमे में निस्संदेह दहशत पैदा कर दी है। परंतु विडंबना यह है कि उपरोक्त उद्देश्य के लिए लड़ रही जनता के संयुक्त क्रांतिकारी मोर्चे में विचारधारा एवं चिंतन की एकरूपता के आधार पर सुदृढ़ एकजुटता की अभी भी कमी है। यह स्थिति जिस खतरे से भरी है, उसे नजरअंदाज करने से, उसे कम करके आंकने से या उस तरफ से आंख मूंद लेने से उस खतरे को टाला नहीं जा सकता। हालांकि सभी कम्युनिस्ट इसे अलग-अलग ढंग से बार-बार स्वीकार करते हैं, फिर भी व्यवहार में विभिन्न बिरादराना समाजवादी देशों के प्रति विश्व साम्यवादी खेमे के नेतृत्व द्वारा हाल ही में प्रदर्शित रवैये में बॉसगीरी (Bossism) प्रतिबिम्बित हुई है और कुछ मामलों में लौह अनुशासन लागू करने के नाम पर यह

खामख्वाह कठोर हो गया है। इस सबसे ऐसा प्रतीत होता है कि विश्व साम्यवादी खेमे को मौजूदा संकट से उबारने की बजाय मौजूदा नेतृत्व का नजरिया और रवैया संभवत: मौजूदा स्थिति को निकट भविष्य में अत्यंत गहरे संकट में धकेल देगा।

विश्व साम्यवादी आन्दोलन की अनेकानेक उपलब्धियों-सफलताओं और शानदार कुर्बानियों को उचित गर्व एवं श्रद्धा के साथ मान्यता देते हुए भी हम इसमें मौजूद गंभीर कमियों की तरफ ध्यान दिलाने में एक पल के लिए भी नहीं चूके हैं। सभी सच्चे कम्युनिस्ट, जो आत्म-आलोचना के नाम पर आत्म-प्रवंचना से बहकना नहीं चाहते और किसी भी प्रकार के अंध-आवेग या पूर्वाग्रह से प्रभावित होने की बजाय विचार-विश्लेषण की वैज्ञानिक पद्धति की मदद से इस संकट से उबरने के लिए क्रांतिकारी कार्यक्रम अपनाना चाहते हैं, वे इन गंभीर कमियों को कम करके नहीं आंक सकते, बल्कि उन्हें इन कमियों के कारणों की वैज्ञानिक ढंग से गहन जांच करनी होगी।

ये गंभीर कमियां-खामियां अधिकांशत: इस सच्चाई के कारण हैं कि विश्व साम्यवादी खेमे का मौजूदा नेतृत्व काफी हद तक चिंतन की यांत्रिक प्रक्रिया से प्रभावित है। अत्यंत दु:ख और दुश्चिंता के साथ हम यह एक लम्बे समय से देखते आ रहे हैं। हमारी राय में ठीक इसी कारण से विभिन्न देशों की बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच समानता और आपसी सम्मान के आधार पर परस्पर निर्भरशील एवं हितकारी संबंध के मार्क्सवादी द्वन्द्वात्मक सिद्धांत का निरंतर उल्लंघन हुआ है। इसका अंतत: नतीजा यह हुआ कि विचारों की अंतर्क्रिया के माध्यम से क्रांतिकारी कम्युनिस्ट नेतृत्व के उभरने-बनने की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के संबंध में ऐतिहासिक तजुर्बों की कसौटी पर खरे उतरे मार्क्सवादी विज्ञान को ही नकार दिया गया है।

जहां लेनिनवादी सिद्धांत में यह स्वीकार किया गया है कि क्रांति की आम अन्तर्राष्ट्रीय लाइन तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न देशों की ठोस सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थितियों के आधार पर विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट

पाटियों के बीच विचार-विमर्श के जरिये उभरकर आनी चाहिए, वहीं इसके उलट हम लम्बे अर्से से देखते आ रहे हैं कि क्रांति की आम अन्तर्राष्ट्रीय लाइन तैयार करने की इस द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया का पालन करने की बजाय मात्र एक या दो अग्रणी कम्युनिस्ट पार्टियों के अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के विश्लेषण को आलोचनात्मक जांच-परख के बिना आम अन्तर्राष्ट्रीय लाइन के रूप में स्वीकार कर लेने की एक आदत एवं परिपाटी चल पड़ी है।

अंततः इसका परिणाम यह हुआ है कि 'अन्तर्राष्ट्रीय नेतृत्व' की धारणा विकसित होने के मामले में विचारों के पारस्परिक टकरावों को नकार दिया गया। जाहिर है कि इसका नतीजा विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के लिए विनाशकारी हुआ। कहने का तात्पर्य यह है कि जहां कम्युनिस्ट पार्टियों का नेतृत्व पार्टी सदस्यों, नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच विचारों के संघर्ष एवं अन्तर्द्वन्द्व के जरिये और विश्व साम्यवादी आन्दोलन के तरह-तरह के तजुर्बों से ज्ञान हासिल करने के जरिये विकसित होना चाहिए था, वहीं अधिकांश पार्टियों ने यांत्रिक केन्द्रीकरण का आसान रास्ता चुना, जिसके नतीजतन शीर्ष पर अफसरशाही नेतृत्व का निर्माण हुआ।

यह परिघटना विश्व साम्यवादी आन्दोलन में सैद्धांतिक एवं राजनैतिक कार्यक्षेत्रों में गंभीर कमियों की ओर स्पष्ट संकेत करती है। इसका सबूत विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों की इस स्वीकारोक्ति से ही मिल जायेगा (इस संदर्भ में फ्रांस, इटली, भारत आदि की कम्युनिस्ट पार्टियों का हवाला दिया जा सकता है, जिन्होंने अपने-अपने देशों में मौजूद ठोस राजनैतिक स्थितियों में बहु-प्रसिद्ध 'जन-युद्ध' के सिद्धांत को लागू करने के मामले में कॉमिनफोर्म की एक बैठक में अपनी गलती स्वीकार की थी) कि द्वितीय विश्व-युद्धोत्तर काल में ट्रेड यूनियन आन्दोलन में खूब प्रगति करने के बावजूद रोजमर्रा के संघर्ष संचालित करने के मामले में वे एक गलत दिशा-निर्देश एवं गैर-सर्वहारा वर्गीय दृष्टिकोण से संचालित रहे हैं।

वैचारिक गतिविधियों के क्षेत्र में लगे इस धक्के के कारण ही क्रांतिकारी संघर्ष के निर्णायक एवं महत्वपूर्ण मुकाम पर पहुंचने के

बाद भी जिन पार्टियों को आखिरी लड़ाई के लिए खुद को तैयार करना है, उन्हें इस निर्णायक घड़ी में भी पार्टियों के अंदर वैचारिक संघर्ष चलाने हेतु नये सिरे से कार्यक्रम लेना पड़ा है।

स्वाभाविक रूप से सवाल उठता है : यह संघर्ष किसलिए है और पार्टी के अंदर यह किसके खिलाफ चलाया जाना है? क्या इस संघर्ष को शुरू करने का निर्णय पार्टी के अंदर चिंतन की द्वन्द्वात्मक पद्धति को विकसित करने की जरूरत एवं उसके बारे में सटीक समझदारी की स्वीकृति को किसी भी प्रकार प्रकट करता है? हमारे ख्याल में मौजूदा वैचारिक संघर्ष के सवाल का मर्म इसी में निहित है। विभिन्न देशों के कम्युनिस्टों ने अभी तक अधिकांशत: सैद्धांतिक मामलों के साथ सांगठनिक कामों के समन्वय को कोई तवज्जो दिये बिना ही संगठन के रोजमर्रे के कार्यों पर ही एकतरफा जोर दिया। दूसरी ओर ये नेतागण पार्टी कार्यकर्ताओं को केवल पार्टी के प्रति उनके कर्तव्य, अनुशासन (जो यांत्रिक के सिवा कुछ नहीं है) तथा किसी भी तरह पार्टी संगठन को फैलाने की जरूरत के बारे में ही उद्‌बोधित करते रहे।

परंतु अब प्रायश्चित करने का दिन आ गया है। अब यह अधिकाधिक महसूस किया जाने लगा है कि पार्टियों में 'स्क्रीनिंग' (यानी छानकर कूड़े को अलग करना) और 'पर्ज' (यानी शुद्धिकरण) के बिना उनके लिए भविष्य में आन्दोलन चलाने लायक नेतृत्व प्रदान कर पाना असंभव होगा। क्योंकि साम्यवादी आन्दोलन का मौजूदा नेतृत्व बड़ी देर बाद यह महसूस करने लगा है कि लक्ष्य की स्पष्ट समझदारी के बिना कार्यकर्ताओं के द्वारा कमोबेश अंधे की तरह उठाये असीम कष्टों एवं कुर्बानियों के जरिये विकसित हुए बड़े-बड़े संगठन काफी हद तक वास्तविक बुनियाद के बिना हैं, जिसके फलस्वरूप विरोधी ताकतें (जनवादी मोर्चे में साझीदार उदार जनवादी और सामाजिक जनवादी ताकतें) उनकी मेहनत के तमाम फलों को हड़प लेना संभव कर पा रही हैं। इससे इस बात की व्याख्या होती है कि मार्क्सवादी ज्ञान-विज्ञान को पार्टियों के सामूहिक ज्ञान में परिणत करने के लिए सैद्धांतिक संघर्षों को नये सिरे से

छेड़ने के प्रयास क्यों करने पड़ रहे हैं। लेकिन यहां भी जिस तरह से आलोचना, आत्म-आलोचना चलायी जा रही है, साम्यवादी आन्दोलन की पिछली व वर्तमान सीखों को विरोधी विचारों और दृष्टिकोणों के साथ द्वन्द्व-संघर्ष में आने के किसी भी मौके से वंचित करके या फिर इसको जान-बूझकर पूर्णत: नजरअंदाज करके जिस तरह समस्याओं के प्रति एकदम एकतरफा विश्लेषण एवं यांत्रिक रवैये की नीति का अनुसरण किया जा रहा है और उसी को अनुशासन बोध एवं गतिशील दिमाग के सूचक चिह्न के रूप में बिना सवाल उठाये अंधतापूर्वक मान लिये जाने का जिस तरह गुणगान किया जा रहा है, उसने हमारे मन में शंका पैदा कर दी है, आयाकि मौजूदा कॉमिनफोर्म नेतृत्व इस अंधी गली से अंतत: निकल भी पायेगा कि नहीं।

इस संदर्भ में यह साफ हो जाना चाहिए कि अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन के जो कुछ भी बुनियादी उद्देश्य और मौजूदा राजनैतिक कार्यक्रम हैं, उनसे जहां हमारा कोई मतभेद नहीं है, वहीं हमारी दृढ़ राय है कि वैचारिक संघर्ष चलाने में और सांगठनिक मामलों को संभालने में नेतागण कोई गलती ही नहीं कर सकते अथवा यह कि उनके गलती करने पर आत्मालोचना की भावना से उंगली उठाने का कोई भी प्रयास खुद साम्यवादी आन्दोलन को ही कमजोर कर देगा—यह मनोभाव मात्र अंधता और बुर्जुआ पलायनवाद से प्रभावित मनोभाव है, जो कि मार्क्सवाद से मेल नहीं खाता है।

यह साबित हो चुका है कि कम्युनिस्ट खेमे के साथ अपनी लम्बी संबद्धता तथा कई ऐतिहासिक क्रांतिकारी लड़ाइयों की परंपरा जारी रखने के अपने श्रेय के बावजूद मार्शल टीटो के नेतृत्व में कम्युनिस्ट लीग ऑफ युगोस्लाविया मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांतों को ठीक ढंग से पकड़ पाने में नाकामयाब रही है। इसलिए, अतीत के दु:ख-कष्टों और कुर्बानियों का रिकार्ड ही इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि आज के साम्यवादी आन्दोलन सही ढंग से चलाये जा रहे हैं; दृष्टिकोण, अभिमत और कार्यक्रम को परीक्षित-निरीक्षित सत्य एवं मार्क्सवाद की बुनियादी सीखों की कसौटी पर और जहां

तक संभव हो, हर व्यावहारिक मुद्दे पर निरंतर जांचा-परखा जाना चाहिए। कॉमरेड स्तालिन के निम्नलिखित शब्दों में यह बात साफ जाहिर हुई है : ''व्यवहार के बिना सिद्धांत बांझ है और सिद्धांत के बिना व्यवहार अंधा।'' यद्यपि एक तरफ सांगठनिक एकजुटता को सुदृढ़ करने के मौजूदा कॉमिनफॉर्म नेतृत्व के आह्वान की पार्टियों के अंदर व्यापक तौर पर अनुकूल प्रतिक्रिया हुई है, तो दूसरी तरफ अनेक बहादुराना संघर्षों के जरिये निर्मित सुदृढ़ एकजुटता में नयी दरारों के उभरने के आसार नजर आ रहे हैं।

इस संदर्भ में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इटली के अंदर तोगलिआती और लेफ्ट-विंग कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के बीच मतभेदों, टीटो के नजरिये के साथ एकरूपता रखने के कारण पोलिश वर्कर्स पार्टी के सेक्रेटरी के पद से गोमुल्का को हटाये जाने तथा बुल्गारिया के खिलाफ कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ मैसीडोनिया के इस आरोप का उल्लेख किया जा सकता है कि वह राष्ट्रों के आत्म-निर्णय के अधिकार के मामले में लेनिन और स्तालिन की शिक्षाओं का पालन नहीं कर रहा है। इसके अलावा इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि भारत में कम्युनिस्टों के रूप में परिचित पार्टियों के, जो कम से कम जबानी तौर पर अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट नेतृत्व के प्रति अपनी निष्ठा का दम भरती हैं, राजनैतिक व्यवहार को लेकर पहले ही गंभीर सवाल पैदा हो चुके हैं।

आज अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन में प्रचलित इन गंभीर भ्रांतियों की जड़ में निहित अभी-अभी बताये गये कारणों के अतिरिक्त एक अन्य पहलू पर भी गौर करना जरूरी है। वह यह कि राजसत्ता के स्तर पर निर्देशित सोवियत विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रांति की गति को तेज करने हेतु सीपीएसयू के कार्यभार के बीच संबंध क्या होना चाहिए? क्या ये आपस में एक-दूसरे के पूरक हैं या एक दूसरे से भिन्न हैं?

इस सवाल पर कम्युनिस्टों के बीच काफी भ्रम मौजूद हैं। कुछ का मानना है कि राजसत्ता के स्तर पर निर्देशित सोवियत विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्वहारा आन्दोलन की रफ्तार को

तेज करने की सोवियत नीति स्पष्ट रूप से अलग-अलग हैं, जिनके बीच कोई भी संबंध नहीं है, वहीं कुछ अन्यों का मानना है कि न सिर्फ दोनों एक दूसरे से अलग नहीं है, बल्कि दोनों एक ही हैं।

पहला ट्राटस्कीवाद से प्रभावित है, जबकि दूसरा कम्युनिस्ट हलकों में एक प्रसिद्ध सिद्धांत है। लेकिन दरअसल राजसत्ता के स्तर पर निर्देशित सोवियत संघ की विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रांतिकारी आन्दोलन की रफ्तार को तेज करने में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) का कार्यभार एक दूसरे से अलग नहीं हैं, इसी प्रकार, इन दोनों को एक ही समझ लेना भी उतना ही गलत होगा, क्योंकि उससे सोवियत संघ की भूमिका एवं उसके द्वारा ग्रहण की गयी विदेश नीति के क्रांतिकारी तात्पर्य का सही मूल्यांकन करने में एक गंभीर अड़चन उत्पन्न हो जायेगी। ये दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए परस्पर पूरक एवं अंतर्निर्भर हैं। सोवियत विदेश नीति को तैयार करते समय और उसे लागू करते समय सीपीएसयू के नेताओं को मुख्यतः दो बिंदुओं पर नजर रखनी होगी। पहला बिन्दु है, उन्हें इस संभावना की जांच-परख एवं खोज-बीन करनी होगी कि किस प्रकार हर जगह अप्रत्यक्ष रूप से और यदि संभव हो तो कुछ मामलों में प्रत्यक्ष रूप से भी अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रांतिकारी आन्दोलन को और भी मदद पहुंचायी जा सकती है और उसे मजबूत बनाया जा सकता है। दूसरा बिन्दु है, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियावादी शक्तियों, विश्व साम्राज्यवाद-पूंजीवाद के कुचक्रों, हस्तक्षेपों तथा हमलों से सोवियत समाजवादी राजसत्ता की रक्षा करना और समाजवाद की प्रगति को निर्बाध रूप से जारी रखना। इन्हीं दो खंभों पर सोवियत विदेश नीति टिकी हुई है। इसीलिए, यह निष्कर्ष निकालना खतरनाक होगा कि सोवियत विदेश नीति की जरूरत के कारण समय-समय पर राजसत्ता के स्तर से निर्देशित कोई राजनैतिक या कूटनीतिक कदम अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रांति की ही नीति है। परंतु इस तरह की भ्रांत धारणाएं एवं गलत विचार आज साम्यवादी खेमे में नये-नये भ्रम पैदा कर रहे हैं।

हम एक बार पुनः इस बात पर जोर देना चाहेंगे कि सोवियत संघ की विदेश नीति को मात्र उसके बाहरी स्वरूप को देखकर ही सतही तौर पर विचार कर धारणा बना लेने और साधारण व्याख्या करने से ही उसकी अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी नीति के असल निहितार्थ को सही ढंग से समझ पाना संभव नहीं है। संघर्षों के ठोस अनुभवों से हासिल किये गये तथा अक्तूबर क्रांति की सीखों में निहित, लेनिन और स्तालिन की शिक्षाओं की रणकौशलगत कार्यपद्धति की ठीक समझदारी के बिना मौजूदा जटिल राजनैतिक स्थिति में इसे सही ढंग से समझ पाना असंभव है।

जिस प्रकार ट्राटस्कीपंथियों ने सोवियत विदेश नीति के निहितार्थ और अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रांतिकारी आन्दोलन को तीव्र करने में सोवियत संघ की महत्वपूर्ण भूमिका को तोड़ा-मरोड़ा है, उसी प्रकार अतीत में तीसरे इंटरनेशनल से एवं वर्तमान में कॉमिनफॉर्म से संबद्ध विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी सोवियत संघ की विदेश नीति, जो बुनियादी तौर पर लेनिनवाद से संगति रखती है, के बारे में सामान्य एवं सरलीकृत दृष्टिकोण अपनाकर गंभीर गलतियां की हैं। इसी वजह से वे सोवियत विदेश नीति एवं विभिन्न देशों में क्रांति के कार्यभार के बीच मौजूद वस्तुगत द्वन्द्व को समझ पाने में विफल रही हैं। ये पार्टियां सोवियत विदेश नीति के सवाल को विभिन्न देशों की क्रांति के सवाल के साथ गड्डमड्ड कर रही हैं और इसके परिणामस्वरूप, नयी-नयी जटिलताओं एवं समस्याओं के सामने वे निरंतर एक के बाद दूसरी गलती करती जा रही हैं।

दुनिया भर के कम्युनिस्टों से, विशेषकर भारत के उन लोगों से जिन्हें कम्युनिस्ट के रूप में जाना जाता है, हम अपील करते हैं कि वे हमारी इस आलोचना को विरोधियों द्वारा की गयी आलोचना के रूप में नहीं, बल्कि आत्म-आलोचना के रूप में लें। कम्युनिस्टों के समक्ष जिस बात को खास तौर पर हम रखने की कोशिश कर रहे हैं, वह यह है कि सोवियत या कॉमिनफॉर्म नेतृत्व में एकदम अंध श्रृद्धा रखना इसे केवल कमजोर ही करेगा। हमारे पास विश्व सर्वहारा क्रांतिकारी आन्दोलन के अनुभवों का

भंडार है, हमारे पास द्वन्द्वात्मक मार्क्सवादी विज्ञान है–ये हमें ऐसी पद्धति प्रदान करते हैं, जिसके जरिये हमें नेतृत्व को परखना होगा–चाहे वह सोवियत नेतृत्व हो या फिर कॉमिनफॉर्म का नेतृत्व। एक पल के लिए भी यह नहीं भूलना चाहिए कि हर एक कम्युनिस्ट पार्टी की अपनी-अपनी पहलकदमियों से ही अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट संगठनों की कार्यकारिता एवं गतिशीलता की सुदृढ़ बुनियाद निर्मित होती है। आंखें मूंदकर नेतृत्व को निरंतर अंध समर्थन देते जाने की आदत से विश्व स्थिति का वस्तुपरक मूल्यांकन कर पाना और सही कार्यक्रम अपनाना असंभव है। टीटो एवं अन्य विघटनकारियों का इतिहास हमारे इस विश्लेषण को संदेहातीत रूप से सही साबित करता है कि अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन में चिंतन प्रक्रिया तथा आन्दोलन की पद्धति त्रुटि-मुक्त नहीं रही है। इस सच्चाई पर पर्दा डालने का कोई भी प्रयास आत्म-प्रवंचना के सिवाय कुछ नहीं है और मौजूदा भ्रांति एवं संकट की जिम्मेदारी मुख्यत: (अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी) आन्दोलन को अपने ऊपर लेनी होगी। इसलिए हर कम्युनिस्ट कार्यकर्ता के लिए लाजिमी है कि वह आवेगमुक्त होकर विचार करे तथा साम्यवादी आन्दोलन के अतीत के इतिहास, वर्तमान के रुझान एवं प्रवृत्तियों व भविष्य की दिशा के बारे में सजग रहे, क्योंकि ट्राटस्कीवाद के दफन के साथ ही साम्यवादी आंदोलन से विघटन खत्म नहीं हुआ है; अगर निरंतर पर्याप्त चौकसी नहीं रखी गयी, तो वर्तमान अत्यंत जटिल राजनैतिक स्थिति के संदर्भ में साम्यवादी खेमे में नयी-नयी दरारों के उभरने की संभावनाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

सिर्फ इतना ही नहीं, वैचारिक सवालों के मामले में वर्तमान में प्रचलित गैर-मार्क्सवादी यांत्रिक दृष्टिकोण की इस समस्या को अगर समय रहते ठीक से नहीं सुलझाया गया, तो कोई आश्चर्य नहीं कि अंततोगत्वा यह विश्व इतिहास में एक नयी परिघटना उत्पन्न कर दे जब लोग देखेंगे कि विभिन्न मुल्कों में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के बाद भी कम्युनिस्ट देश अपने बीच एकता

को और भी मजबूत बनाने और विश्व साम्यवादी समाज की स्थापना की ओर तेजी से कदम बढ़ाने की बजाय एक-दूसरे से खुले टकराव, यहां तक कि युद्ध में लिप्त हो रहे हैं।

मार्क्सवादियों के रूप में हमें इस बात को सदैव सबसे अधिक महत्वपूर्ण समझना चाहिए कि सोवियत संघ को मजबूत बनाने के अपने जोश में हमें कोई भी ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिससे उसके नेतृत्व के तहत विश्व समाजवादी खेमे के हित को किसी भी तरह चोट पहुंचती हो।

यह लेख सर्वप्रथम पार्टी के बांग्ला मुखपत्र
गणदाबी के 15 सितम्बर 1948 के
अंक में प्रकाशित हुआ था।